देवी-देवताओंकी उपासना : दत्त - खण्ड १

भगवान दत्तात्रेय

(अध्याशास्त्रीय विवेचन एवं उपासना)

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाके उद्घोषक

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

पू. संदीप गजानन आळशी

सनातन संस्था

सनातनके ग्रन्थोंकी भारतकी भाषाओंके अनुसार संख्या

मराठी ३४४, अंग्रेजी २०१, कन्नड १९८, हिन्दी १९५, गुजराती ६८, तेलुगु ४५, तमिल ४३, बांग्ला २९, मलयालम २३, ओडिया २२, पंजाबी १३, नेपाली ३ एवं असमिया २

फरवरी २०२४ तक ३६५ ग्रन्थोंकी १३ भाषाओंमें ९५ लाख ९६ सहस्र प्रतियां !

ग्रन्थके संकलनकर्ताओंका परिचय

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवलेजीके आध्यात्मिक शोधकार्यका संक्षिप्त परिचय

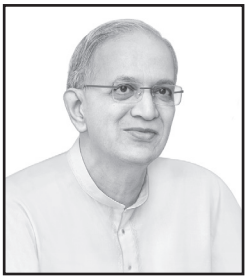

१. अध्यात्मप्रसारार्थ 'सनातन संस्था'की स्थापना

२. शीघ्र ईश्वरप्राप्तिके लिए 'गुरुकृपायोग' साधनामार्गकी निर्मिति : गुरुकृपायोगानुसार साधनासे १.२.२०२४ तक १२७ साधकोंको सन्तत्व प्राप्त तथा १,०५१ साधक सन्तत्वकी दिशामें अग्रसर हैं ।

३. आचारधर्मपालन, देवता, साधना, आदर्श राष्ट्ररचना, धर्मरक्षा आदि विविध विषयोंपर विपुल ग्रन्थ-निर्मिति

४. हिन्दुत्वनिष्ठ नियतकालिक 'सनातन प्रभात'के संस्थापक-सम्पादक

५. धर्माधिष्ठित हिन्दू राष्ट्र (ईश्वरीय राज्य)की स्थापनाकी उद्घोषणा (वर्ष १९९८)

६. 'हिन्दू राष्ट्र'की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन तथा उनका दिशादर्शन !

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीका साधकोंको आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥ - जयंत बाळाजी आठवले
१८.५.१९९६

पू. संदीप गजानन आळशी

सनातनकी ग्रन्थ-रचना की सेवा करनेके साथ ही राष्ट्रजागृति एवं धर्मप्रसार करनेवाली प्रसारसामग्रीके (सनातन पंचांग, धर्मशिक्षा फलक इत्यादि के) लिए लेखन करते हैं । साधना, राष्ट्र एवं धर्म सम्बन्धी नियतकालिक 'सनातन प्रभात'में प्रबोधनपरक लेखन भी करते हैं ।

अनुक्रमणिका

१. अर्थ ९

२. कुछ अन्य नाम (अवधूत, दिगंबर, श्रीपाद, वल्लभ) ९

३. जन्मका इतिहास १२

४. गुरुतत्त्व (दत्ततत्त्व) ये ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश ये तीन तत्त्व मिलकर निर्माण होना १३

५. दत्तके गुरु एवं उपगुरु १३

६. विशेषताएं २५

७. कार्य २८

८. अवतार ३५

९. परिवारका भावार्थ ३५

१०. दत्तात्रेयलोक ३७

११. मूर्तिविज्ञान ३८

१२. सनातन-निर्मित दत्तात्रेयका सात्त्विक चित्र एवं नामजप-पट्टी ४९

१३. उपासना ५५

१४. पितरोंको गति प्राप्त करवानेवाला दत्तका जप / उपासना ७१

१५. दत्तात्रेयकी उपासनासे अनिष्ट शक्तियोंके कष्टसे रक्षा होना ८५

१६. दत्तसम्प्रदाय (नाथसम्प्रदाय, महानुभावसम्प्रदाय आदि) ८६

१७. प्रमुख तीर्थक्षेत्र एवं उनकी विशेषताएं ८९

१८. प्रमुख ग्रन्थ (दत्तपुराण, अवधूतगीता, श्री गुरुचरित्र) ९१

१९. अनुभूतियां ९२

डॉ. जयंत आठवलेजीकी 'सच्चिदानंद परब्रह्म' उपाधिसम्बन्धी विवेचन !

'१३.७.२०२२ से 'सप्तर्षि जीवनाडीपट्टिका'के वाचनके माध्यमसे सप्तर्षियोंकी आज्ञा अनुसार परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीको 'सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले' सम्बोधित किया जा रहा है । इससे पहले उन्हें ग्रन्थोंमें 'प.पू.' एवं 'परात्पर गुरु' की उपाधियोंसे सम्बोधित किया है । इसके अनुसार ग्रन्थके मुखपृष्ठपर एवं ग्रन्थमें वैसा उल्लेख किया है ।

सनातनकी दो सद्गुरुओंके नामोंसे पहले विशिष्ट आध्यात्मिक उपाधि लगानेका कारण

नाडीपट्टिका-वाचनद्वारा सप्तर्षियोंने की आज्ञाके अनुसार १३.५.२०२० से सद्गुरु (श्रीमती) बिंदा नीलेश सिंगबाळजीको 'श्रीसत्शक्ति (श्रीमती) बिंदा नीलेश सिंगबाळजी' व सद्गुरु (श्रीमती) अंजली मुकुल गाडगीळजीको 'श्रीचित्शक्ति (श्रीमती) अंजली मुकुल गाडगीळजी' सम्बोधित किया जा रहा है। ये सन्तद्वयी सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीकी आध्यात्मिक उत्तराधिकारिणी हैं ।

टिप्पणी - सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजीकी एक आध्यात्मिक उत्तराधिकारिणी श्रीचित्शक्ति (श्रीमती) अंजली मुकुल गाडगीळजीको पहले सूक्ष्म-विश्वके एक विद्वान अथवा गुरुतत्त्व के माध्यमसे ज्ञान प्राप्त होता था ।

भूमिका

बहुतांश उपासकोंको दत्तात्रेयदेवता सम्बन्धी जो थोडी-बहुत जानकारी रहती है, वह अधिकतर पढी-सुनी कथाओंसे होती है । ऐसी अल्प जानकारीके कारण दत्त भगवानपर उनका विश्वास भी अल्प ही होता है । दत्त भगवानकी जानकारी जितनी अधिक, उतना अधिक विश्वास निर्माण होनेमें सहायता मिलती है और साधना भी उचित ढंगसे होती है । आध्यात्मिक उन्नतिके लिए जीवको 'पिण्डसे ब्रह्माण्ड'तककी यात्रा पूर्ण करनी पडती है । इसका अर्थ है कि जो तत्त्व 'ब्रह्माण्ड'में अर्थात शिवमें हैं, उनका 'पिण्ड'में अर्थात जीवमें उतरना आवश्यक है । पानीकी बूंदमें तेलका जरासा भी अंश हो, तो वह पानीसे एकरूप नहीं हो सकता; उसी प्रकार जबतक दत्तभक्त दत्तकी सर्व विशेषताओंको आत्मसात् नहीं कर लेता, तबतक वह दत्तसे एकरूप नहीं हो सकता, अर्थात उसकी सायुज्य मुक्ति नहीं हो सकती । इसलिए इस ग्रन्थमें दत्तात्रेय देवताके विषयमें सामान्यरूपसे अन्यत्र न मिलनेवाली; परन्तु उपयुक्त अध्यात्मशास्त्रीय जानकारी अन्तर्भूत की है - दत्त, अवधूत, दिगंबर आदि नामोंका भावार्थ; दत्तद्वारा किए गए गुणगुरु तथा साधकद्वारा वैसे गुणगुरु करनेका महत्त्व; दत्तके कार्य एवं विशेषताएं; दत्तके परिवारका भावार्थ; मूर्तिविज्ञान; पितृदोषसे (पूर्वजोंकी अतृप्तिसे) रक्षा होने हेतु दत्तकी उपासना करनेकी आवश्यकता और वह कैसे करें इत्यादि ।

दत्तभक्तोंको एवं दत्तकी साम्प्रदायिक साधना करनेवालोंको यह अध्यात्मशास्त्रीय जानकारी निश्चित ही उपयुक्त सिद्ध होगी; परन्तु इस सन्दर्भमें साधारण व्यक्ति आगे दिया हुआ नियम ध्यानमें रखें । कुछ लोगोंको रामायण पढनेपर रामकी, गणपति अथर्वशीर्ष पढनेपर गणपतिकी, शिवलीलामृतका पाठ करनेपर शिवकी उपासना करनेकी इच्छा होती है । उसी प्रकार इस ग्रन्थमें दी जानकारी पढकर कुछ लोगोंको लग सकता है कि हमें भी तुरन्त दत्तात्रेय देवताकी उपासना आरम्भ करनी चाहिए । ऐसेमें

ध्यान रहे कि दत्त समान देवताकी उपासनासे सबकी आध्यात्मिक उन्नति शीघ्र नहीं होती; क्योंकि उनके लिए जिस देवताकी उपासना आवश्यक है, वही करनेसे अधिक लाभ होता है । अन्यथा अधिक साधना करनेपर भी बहुत ही अल्प प्रगति होती है । सामान्य मनुष्य नहीं जान सकता कि दत्त समान देवताकी उपासना आवश्यक है या नहीं । यह आध्यात्मिक दृष्टिसे उन्नत पुरुष (सन्त अथवा गुरु) ही बता सकते हैं । इसलिए सामान्य जन केवल जानकारीके लिए इस ग्रन्थका पठन करें । दत्तकी अनुभूति पानेकी दृष्टिसे साधनाका पहला चरण है अपने कुलदेवताके नामका 'श्री... (कुलदेवी / कुलदेव के नामका चतुर्थीका प्रत्यय)... नमः' इस पद्धतिसे नामजप करें । साथ ही अतृप्त पूर्वजोंके कष्टसे रक्षा हेतु कष्टकी तीव्रताके अनुसार दत्तका २ से ६ घण्टे नामजप प्रतिदिन करें ।

श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है, इस ग्रन्थको पढकर दत्त भगवानके प्रति दत्त भक्तोंकी श्रद्धा अधिक दृढ हो और अधिकाधिक साधना करनेकी प्रेरणा मिले । **– संकलनकर्ता**

('अध्यात्मशास्त्र' ग्रन्थमालाके सर्व खण्डोंकी संयुक्त भूमिका 'धर्मका मूलभूत विवेचन' ग्रन्थमें दी है ।)

संस्कृत भाषानुरूप हिन्दीके प्रयोग हेतु सनातनका समर्थन !

हिन्दीमें उर्दूकी भांति कुछ शब्दोंके नीचे बिन्दु (नुक्ता) लगाते हैं, उदा. हज़ार, जोड़, गाढ़ा । संस्कृत देवभाषा है । सनातन संस्था उसे आदर्श मानकर, ग्रन्थोंमें शब्दोंके नीचे बिन्दु नहीं लगाती तथा कारकचिन्हको धातुसे जोडती है । संस्कृत समान हिन्दीका प्रयोग करना अर्थात 'चैतन्यकी ओर अग्रसर होना' । प्रत्येक व्यक्ति इसका आचरण कर 'स्वभाषा' रक्षार्थ अर्थात धर्मरक्षाके कार्यमें सहभागी होकर अपना धर्मकर्तव्य निभाए !

– (सच्चिदानंद परब्रह्म) डॉ. आठवले